दूर शिक्षा निदेशालय

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम - पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर (एम.जे.एम.सी)

सत्र : 2017-18, द्वितीय वर्ष

क्र.	प्रश्नपत्र कोड	विषय
1	MJMC - 06	दृश्य-श्रव्य जनसंचार प्रविधि
2	MJMC - 07	विकासात्मक जनसंचार
3	MJMC – 08	ग्रामीण एवं पर्यावरण पत्रकारिता
4	MJMC – 09	मुद्रण प्रकाशन एवं जनसंचार प्रबंधन
5	MJMC - 11	परियोजना (कार्य प्रोजेक्ट)

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

गांधी हिल्स, वर्धा – 442001 (महाराष्ट्र) भारत

नोट – सभी विद्यार्थी सत्रीय कार्य अंतिम तिथि तक संबंधित केंद्र जहां कि विद्यार्थी ने प्रवेश लिया है, अवश्य जमा कर दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि : 15 मई 2018, सायं 05:00 बजे तक

सत्रीय कार्य (Assignment) 2017-18

क्र.	प्रश्नपत्र कोड	विषय
1	MJMC - 06	दृश्य-श्रव्य जनसंचार प्रविधि
2	MJMC - 07	विकासात्मक जनसंचार
3	MJMC – 08	ग्रामीण एवं पर्यावरण पत्रकारिता
4	MJMC – 09	मुद्रण प्रकाशन एवं जनसंचार प्रबंधन
5	MJMC - 11	परियोजना (कार्य प्रोजेक्ट)

सत्रीय कार्य का प्रारूप -

दूरशिक्षा के अंतर्गत अध्ययनरत एम.ए. पत्रकारिता एवं जनसंचार के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को उपरोक्त विषयों के सत्रीय कार्य पूर्ण करने हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए निम्नलिखित प्रारूप में सत्रीय कार्य (चार लघु उत्तरीय व एक दीर्घ उत्तरीय कार्य) करना होगा –

सत्रीय कार्य कोड – एमजेएमसी 1/2015-16 **कुल अंक : 30 (20+10)**

1- लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द) – कुल संख्या : 04,
प्रत्येक हेतु अधिकतम अंक 05 अर्थात (04 × 05 = 20)

2- लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द) – कुल संख्या : 01,
अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)

नोट – सभी विद्यार्थियों से अपेक्षित है कि पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य को पूर्ण करने के लिए दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा पाठ्यचर्या की उपलब्ध पुस्तक/पुस्तिका/पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात लेखन कार्य करेंगे। प्रत्येक सत्रीय कार्य निर्धारित प्रारूप में प्रस्तुत करेंगे । यह सत्रीय कार्य पाठ्य सामग्री, अन्य पुस्तक व संदर्भ द्वारा विकसित समझ और ज्ञान के आधार पर लिखना होगा । इस लेखन में विषयवस्तु के अंतर्गत ऐतिहासिक संदर्भ, अवधारणात्मक पहलू , समकालीन स्थितियों के साथ विभिन्न दृष्टिकोण, आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य और विश्लेषण का समावेश हो तथा उदाहरण सहित उल्लिखित किया जाना चाहिए जिससे विषय की प्रासंगिकता स्पष्ट दिखे ।

सत्रीय कार्य हेतु निर्देश -

१- सत्रीय कार्य लेखन के प्रथम पृष्ठ पर अध्ययन केंद्र का नाम, पाठ्यक्रम कोड, पाठ्यक्रम का नाम, अनुक्रमांक, सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र/विषय/शीर्षक का नाम निम्नलिखित प्रारूप में लिखेंगे ।

२- अपना नाम, दर्शाया गया/पत्राचार का पता, दिनांक सहित हस्ताक्षर अवश्य उल्लेखित कीजिए ।

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

सत्रीय कार्य (Assignment) 2017-18

पाठ्यक्रम - पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर (एम.जे.एम.सी)
सत्र : 2017-18, प्रथम वर्ष

अध्ययन केंद्र का नाम - .....

पाठ्यक्रम कोड - .....

पाठ्यक्रम का नाम - .....

अनुक्रमांक - .....

सत्रीय कार्य/विषय का नाम - .....

दिनांक - **हस्ताक्षर**

स्थान - **(विद्यार्थी का नाम)**

अभ्यर्थी का नाम - .....

पता - .....

.....

.....

सत्रीय कार्य (Assignment) 2017-18

क्रम	प्रश्नपत्र कोड	प्रश्नपत्र का नाम
1	MJMC - 06	**दृश्य-श्रव्य जनसंचार प्रविधि MJMC - 06** **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द), कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- रेडियो प्रसारण की विभिन्न विधाओं का परिचय दीजिए और वर्तमान में प्रासंगिक विधा की चर्चा कीजिए। 2- विश्व सिनेमा के साथ भारतीय सिनेमा की स्थिति व इतिहास यात्रा की व्याख्या कीजिए। 3- टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण में कैमरा तकनीक के विविध पक्षों को केंद्र में रखते हुए दृश्य, गति व कोण के महत्व पर प्रकाश डालिए। 4- प्रसार भारती की स्थापना की चर्चा कीजिए तथा इसके पश्चात आए परिवर्तन को बतलाएं। **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द), कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 1- सूचना प्रौद्योगिकी की प्रासंगिकता को स्पष्ट करें तथा भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी की वर्तमान स्थिति को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2	MJMC - 07	**विकासात्मक जनसंचार (MJMC - 07)** **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द), कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- विकासात्मक समाचार की प्रासंगिकता को बतलाएं ? विकास संचार के लिए लेखन संबंधी आवश्यक बिंदुओं को उल्लेखित कीजिए। 2- विभिन्न पहलुओं को दृष्टिगत रखते हुए विकास संचार के विस्तार तथा धाराओं की व्याख्या कीजिए। 3- पारंपरिक जनसंचार माध्यमों किस प्रकार उपयोगी हैं। परंपरागत जनमाध्यमों की बहुआयामी उपयोगिता व भविष्य को स्पष्ट करें। 4- ग्रामीण विकास की दृष्टि से सामाजिक व अर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डालिए। **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द), कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 1- विकासात्मक संचार के प्रमुख सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए तथा किसी सिद्धांत के बहुआयामी दृष्टिकोण का विश्लेषण कीजिए।

3	**MJMC – 08**	**ग्रामीण एवं पर्यावरण पत्रकारिता(MJMC – 08)** **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द), कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- आधुनिक जनसंचार व्यवस्था के प्रभाव ने ग्रामीण क्षेत्रों में क्या बदलाव लाए हैं? 2- ग्रामीण पत्रकारिता के मापदंड क्या होते है? राष्ट्रीय विकास में ग्रामीण पत्रकारिता का क्या योगदान होता है? 3- पारंपरिक लोकजनमाध्यमों की क्या उपयोगिता है ? उपयुक्त उदाहरण द्वारा लोकजनमाध्यम विधा की प्रासंगिकता को स्पष्ट करें। 4- पर्यावरणीय शिक्षा के क्या उद्देश्य होते हैं ? भारतीय पर्यावरण की विविधता को स्पष्ट कीजिए। **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द), कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 1- ग्रामीण विकास के लिए कौन से जनमाध्यम प्रभावशाली हो सकते हैं ? क्या जनमाध्यम ग्रामीण विकास को कुशल मार्गदर्शन दे सकते हैं। अपने विचार प्रकट कीजिए।
4	**MJMC – 09**	**मुद्रण, प्रकाशन एवं जनसंचार प्रबंधन (MJMC – 09)** **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द), कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- भारत में मुद्रण प्रणाली की विकास यात्रा को बतलाएं। 2- वर्तमान पत्रकारिता जगत में श्रमजीवी पत्रकार अधिनियम को किस रूप में देखा जा सकता है ? इसके प्रावधानों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। 3- प्रेस परिषद के गठन के क्या उद्देश्य थे ? वर्तमान समय में इसकी कार्य प्रणाली और प्रासंगिकता को विस्तार से बतलाइए। समाचारपत्र के प्रसार और वितरण प्रणाली को विस्तार से समझाइए। 4- प्रबंधन की दृष्टि से समाचार समितियों के गठन व संचालन प्रक्रिया को बतलाएं। **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द), कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 1- व्यावसायिक ढांचागत स्थिति के अनुसार किसी समाचारपत्र में यह ढांचा किस प्रकार का होता है?

	MJMC – 11	**परियोजना कार्य (प्रोजेक्ट) MJMC – 11** ● यह एक लघु शोध परियोजना कार्य है। इस कार्य को पाठ्यक्रम में दिए गए प्रश्नपत्र और पाठ्य सामग्री जनसंचार शोध प्रविधि के अंतर्गत विकसित समझ के आधार पर पूरा किया जाएगा। साथ ही चयनित विषय के अनुसार उपयुक्त शोध प्रविधि का प्रयोग भी किया जाएगा। ● परियोजना कार्य के विषय चयन के समय उसकी प्रासंगिकता का ध्यान अवश्य रखें। ● शोध परियोजना कार्य का लेखन विस्तारपूर्वक, विश्लेषणात्मक तरीके से प्रत्येक विषय के अनुसार क्रमबद्ध तरीके से लिखा जाता है। विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष और संदर्भ भी लिखा जाएगा। ● यदि विषय चयन से संबंधित कोई समस्या हो तो आप संबंधित केंद्र/दूर शिक्षा निदेशालय/पाठ्यक्रम संयोजक से ई-मेल से संपर्क कर सकते हैं।